जलेबियां

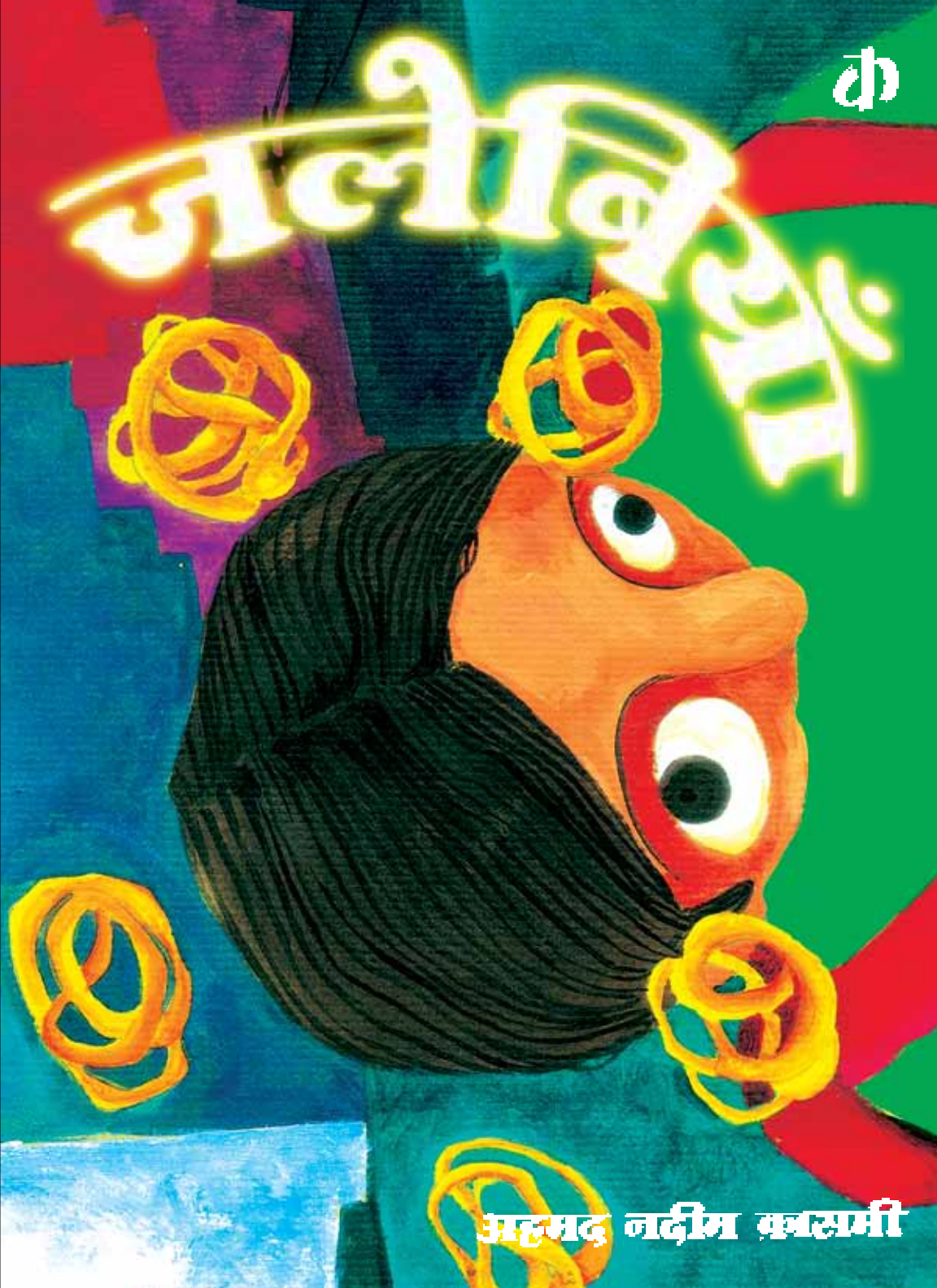

अहमद नदीम क़ासमी

लेखक के बारे में

पाकिस्तान के मशहूर कवि, पत्रकार, नाटककार, साहित्य समीक्षक और लेखक, **अहमद नदीम क़ासमी** समकालीन उर्दू साहित्य के प्रमुख नामों में गिने जाते हैं। "प्रोग्रेसिव राईटर्स मूवमेंट" में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहा। उनकी लगभग पचास किताबें प्रकाशित हुई हैं। "द ओल्ड बैनयन एण्ड अदर स्टोरीज़," "चौपाल" और कविताओं की कुसुमावली, "धड़कने" उनकी कुछ कृतियाँ हैं।

जलेबियाँ

अहमद नदीम क़ासमी

की उर्दू कहानी पर आधारित
कथा द्वारा संक्षिप्त अनुवाद

सीरीज़ संपादिकाः गीता धर्मराजन

KATHA

प्रथम हिन्दी संस्करण 2008, दूसरा संस्करण 2010
तीसरा संस्करण 2010, चौथा संस्करण 2010
कृति स्वामित्व © गीता धर्मराजन
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।
नई दिल्ली द्वारा मुद्रित
ISBN 978-81-89934-08-8
कवर चित्राँकन एवं डिज़ाइनः गरिमा गुप्ता
चित्राँकनः एम डी हुसैन एवं दिलिप कुमार मंडल

कथा एक पंजीकृत अलाभकारी संस्था है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रुचि एवं इससे मिलनेवाली खुशी को बढ़ावा देना।

ए 3 सर्वोदय एनक्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग
नई दिल्ली–110017
दूरभाषः 4182 9998, 2652 4511
फैक्सः 2651 4373
ई मेलः kathakaar@katha.org, इंटरनेटः http://www.katha.org

1

यह घटना बहुत साल पुरानी है। मैं कम्बलपुर, जिसे अब अटक कहा जाता है, के सरकारी स्कूल के पांचवे दर्जे में था। एक दिन, स्कूल की फ़ंड फ़ीस देने के लिए मैं अपनी जेब में चार रुपये लेकर स्कूल गया।

जब मैं वहाँ पहुँचा तो पाया कि वो टीचर जो फ़ीस जमा करते हैं, मास्टर गुलाम मोहम्मद, छुट्टी पर थे। फ़ीस अगले दिन जमा की जानी थी।

पूरे दिन वो रुपये मेरी जेब में चुपचाप बैठे रहे। जैसे ही स्कूल ख़त्म हुआ और मैं बाहर आया, उन्होंने बोलना शुरू कर दिया।

दर्जेः कक्षा, क्लास

जानता हूँ, सिक्के बोलते नहीं हैं, खनकते हैं। लेकिन मैं आपको बता रहा हूँ, उस दिन वो वाक़ई बोले!

एक रुपये ने कहा, "क्या सोच रहे हो? उस दुकान के कढ़ाइओं में से ताज़ी गर्म जलेबियाँ ऐसे ही बिना वजह तो नहीं निकल रहीं! जलेबियों का मक़सद है खाए जाना। और उन्हें वही खा सकते हैं जिनकी जेब में पैसा हो। पैसा भी बेमतलब नहीं होता। उसका मक़सद भी ख़र्च होना होता है, और पैसे वही ख़र्च सकता है जिसे जलेबियाँ पसंद हों।"

गुमराहः ग़लत सीख देना, भटका हुआ

"देखो चार रुपयों," मैंने उनसे कहा, "मैं एक अच्छा लड़का हूँ। मुझे गुमराह मत करो, वरना तुम्हारे लिए ठीक नहीं होगा। मुझे घर में इतना मिलता है कि बाज़ार की किसी चीज़ को देखना भी मैं गुनाह समझता हूँ।

"तुम मेरे फ़ीस फ़ंड के पैसे हो। अगर मैं तुम्हें ख़र्च कर देता हूँ, तो कल स्कूल में मास्टर गुलाम मोहम्मद को, और क़यामत के दिन अल्लाह मियाँ को क्या मुहँ दिखाऊँगा?

क़यामतः इस्लाम और ईसाई धर्मों मे मानते हैं कि इस दिन सब आत्माओं के कर्मों का सर्वोच्च आत्मा के सामने हिसाब-किताब होगा।

"तुम शायद जानते नहीं, लेकिन जब मास्टर गुलाम मोहम्मद गुस्सा होते हैं, तो तुम्हें बेंच पर खड़ा कर देते हैं, और आख़िरी घंटी तक बैठने को कहना भूल ही जाते हैं। तो बेहतर यही होगा कि तुम मेरे कान खाना छोड़ो और मुझे सीधा घर जाने दो।"

पैसों को मेरा ये कहना इतना बुरा लगा कि वे सब एक साथ बोलने लगे। वहाँ इतना शोर हुआ कि आस-पास से गुज़रनेवाले आश्चर्य से मुझे और मेरी जेब को घूरने लगे। आख़िरकार, घबराकर जब मैंने उन चारों को अपनी मुट्ठी में ज़ोर से दबाया, तब जाकर वे ख़ामोश हुए।

कुछ कदम चलने के बाद, मैंने अपनी पकड़ ढ़ीली छोड़ दी। फ़ौरन् सबसे पुराना सिक्का बोल पड़ा, "हम यहाँ तुम्हारे भले की बात कर रहे हैं, और तुम हो कि हमारा ही गला घोंट रहे हो! मुझे ईमानदारी से बताओ, क्या तुम्हें ताज़ी-ताज़ी, गर्म-गर्म जलेबियाँ खाने की बिल्कुल इच्छा नहीं हो रही?

"अगर तुमने आज हमें ख़र्च कर भी दिया, तो कल तो तुम्हें छात्रवृत्ति का पैसा मिल ही जाएगा। फ़ीस के पैसे की मिठाई और छात्रवृत्ति के पैसे की फ़ीस। कहानी खत्म, पैसा हज़म!"

छात्रवृत्तिः होशियार बच्चों को सरकार की ओर से मिलनेवाला पैसा
कान खानाः बोल-बोलकर परेशान करना

"तुम जो कह रहे हो वो सही नहीं है," मैंने जवाब दिया, "पर ये पूरी तरह ग़लत भी नहीं है। मुझे सोचने दो। मैं कोई आम लड़का नहीं हूँ।"

"ठीक है," सबसे पुराना सिक्का बोला, "तुम आम लड़के नहीं हो। लेकिन ये जलेबियाँ भी तो आम जलेबियाँ नहीं हैं। ताज़ी, करारी, और शीरे से भरी हुई!"

मेरे मुहँ मे पानी आ गया, लेकिन मैं इतनी आसानी से फिसलने वाला नहीं था।

अपने स्कूल में मैं सबसे ज़्यादा संभावनाओं वाला लड़का था। चौथे दर्जे के इम्तहानों में मैंने चार रुपये महीना छात्रवृत्ति भी जीती थी। इसके अलावा, मैं एक अच्छे, खाते-पीते परिवार से था।

अब तक मुझे कभी मार नहीं पड़ी थी। और तो और, मास्टरजी मुझी से दूसरे बच्चों को पिटवाते थे। ऐसा प्रतिष्ठावान बच्चा बाज़ार के बीच खड़ा जलेबियाँ खाएगा? कभी नहीं! मैंने फ़ैसला किया, ये ठीक नहीं। मैंने रुपयों को मुट्ठी में कसकर दबाया और घर आ गया।

संभावनाः जो मुमकिन हो, जो भविष्य में संभव हो
प्रतिष्ठावानः होनहार

२

वो पैसे उस दिन खर्च होने को इतने उतावले थे कि जब तक उनका गला दब नहीं गया, वो लगातार आग्रह करते रहे। जब घर पहुँचकर मैं बिस्तर पर बैठा, तो उन्होंने फिर बोलना शुरु कर दिया। मैं खाना खाने अन्दर गया, तो उन्होंने चीख़ना शुरु कर दिया।

आख़िर तंग आकर, मैं घर से बाहर निकल आया और नंगे पैर बाज़ार की तरफ़ दौड़ा। मैं डरा हुआ था, लेकिन मैंने हलवाई से पूरे एक रुपये की जलेबियाँ तोलने को कहा।

आग्रहः अनुरोध

सस्ते का ज़माना था। तब एक रुपये में आज के २० रु से ज़्यादा जलेबियाँ आ जाती थीं। हलवाई ने एक पूरा अख़बार खोला और उस पर जलेबियों का ढेर लगा दिया।

जैसे ही मैं ढेर इकट्ठा करने लगा, दूर से मुझे अपना तांगा दिखाई दिया। चचाजान कोर्ट से वापस आ रहे थे। मैंने जलेबियों को छाती पर दबाया और गली में भाग लिया। जब मैं एक महफ़ूज़ कोने में पहुँचा, तो जलेबियों का मज़ा लेने लगा। मैंने इतनी खाईं, इतनी खाईं, कि अगर कोई मेरा पेट ज़रा भी दबाता, तो मेरे कान और नाक से जलेबियाँ ही निकलतीं।

जल्द ही, पड़ोस के सारे बच्चे गली में जमा हो गए। तब तक जलेबियों से मेरा पेट इतना भर चुका था कि मैं मज़े के मूड में आ गया। मैंने आसपास खड़े बच्चों में जलेबियाँ बाँटनी शुरु कर दीं।

मूडः भाव
महफ़ूज़ः सुरक्षित

वो खुशी से कूदते चिल्लाते गलियों में भाग गए। जल्दी ही, शायद दूसरों से खुशख़बरी सुन, और बहुत सारे बच्चे आ गए।

मैं फ़ौरन् हलवाई के पास पहुँचा और एक और रुपये की जलेबियाँ ख़रीद लाया। फिर एक घर के चबूतरे पर खड़ा हो गया। जैसे गर्वनर साहब आज़ादी के दिन ग़रीबों में चावल बाँटते हैं, मैं उसी उदारता से बच्चों में जलेबियाँ बाँटने लगा।

मेरे इर्द-गिर्द बच्चों की भीड़ लग गई थी। भिखारियों ने भी हमला बोल दिया था। अगर बच्चे भी विधान सभा के लिए चुने जा सकते, तो उस दिन मैं ज़रूर जीत जाता।

मेरे जलेबी बाँटने वाले हाथों के एक इशारे पर वो भीड़ मरने-मारने को तैयार थी। मैंने बाकी बचे दो रुपयों से भी जलेबियाँ ख़रीदकर बाँट दी।

तब सार्वजनिक नल पर हाथ-मुँह धोकर, मैं चेहरे पर ऐसी मासूमियत लिए घर वापस आया जैसे मैंने कभी जलेबी देखी तक न हो।

अब जलेबियाँ भकोसना तो आसान काम था, पर उन्हें पचाना बिल्कुल दूसरा मसला था। हर सांस के साथ एक डकार, और हर डकार के साथ एक या दो जलेबियाँ बाहर आने का डर मुझे मारे डाल रहा था।

रात को खाना भी खाना पड़ा। अगर मैं नहीं खाता, तो मुझसे वजह पूछी जाती। अगर मैं तबीयत ख़राब होने का बहाना बनाता, तो डॉक्टर को बुलाया जाता। अगर मेरी नब्ज़ देखने के बाद वो ये घोषित करता कि मुन्ना ने तो जलेबियाँ भकोसी हैं, तो मैं बस मर ही जाता।

सार्वजनिकः जन संबंधी
भकोसनाः ठूँसना

नतीजा ये हुआ कि मैं पूरी रात जलेबी की तरह गुच्छा बन पेट दर्द सहता रहा। अल्लाह का शुक्र है कि मुझे चार रुपये की जलेबियाँ नहीं खानी पड़ीं! वरना कहते हैं ना, कि बच्चे जब बोलते हैं, तो उनके मुहँ से फूल झड़ते हैं। मैं दुनिया का पहला बच्चा होता जिसके मुहँ से हर लफ़्ज के साथ करारी तली हुई जलेबी निकलती!

बच्चों का पेट नहीं होता, हाज़मे की मशीन होती है। मेरी मशीन ने भी पूरी रात काम किया। सुबह, हर रोज़ की तरह एक आदर्श विद्यार्थी बना मैं चॉक और स्लेट हाथ में ले स्कूल चल दिया।

मुझे मालूम था कि आज मुझे पिछले महीने की छात्रवृत्ति मिलेगी। और ये भी कि उससे अपनी फ़ीस चुकाने के बाद जलेबियाँ पूरी तरह हज़म हो जाएगी।

जब मैं स्कूल पहुँचा तो पता चला कि छात्रवृत्ति अगले महीने मिलेगी। मेरा सिर घूम गया।

3

मास्टर गुलाम मोहम्मद ने घोषणा की कि फ़ीस आधी छुट्टी में ली जाएगी। जब आधी छुट्टी की घंटी बजी, मैंने बस्ता बगल में दबाया और स्कूल से बाहर निकलकर नाक की सीध में चलता गया, चलता गया। अगर कोई पहाड़ या समन्दर मेरा रास्ता न रोके, तो मैं धरती के ख़ात्मे तक, जहाँ से आसमान शुरु होता है, चलता जाऊँगा, और वहाँ पहुँचकर अल्लाह मियाँ से कहूँगाः अल्लाह मियाँ, अब से हमारी तौबा! बस सिर्फ़ इस बार

हमें बचा लो। किसी फरिश्ते को हुक्म दो कि हमारे पास से गुज़रते हुए हमारी जेब में सिर्फ़ चार रुपये डाल दे। मैं वायदा करता हूँ कि इनका इस्तेमाल सिर्फ़ फ़ीस भरने के लिए करूँगा, जलेबियाँ खाने के लिए नहीं।

मैं उस जगह तो नहीं पहुँच पाया जहाँ धरती ख़त्म होती है, पर हाँ, मैं उस जगह ज़रूर पहुँच गया जहाँ कम्बलपुर का रेलवे स्टेशन शुरु होता है।

बड़ों ने हमेशा मुझे रेल की पटरियाँ पार करने को मना किया था। लेकिन उन्होंने तो

मुझे फ़ीस के पैसों से कभी जलेबियाँ ना खाने के लिए भी चेताया था।

ये अनुदेश उस दिन मेरे दिमाग़ से कैसे निकल गए मुझे नहीं पता।

रेल की पटरियों के पास एक छायादार पेड़ था। मैं उसके नीचे बैठ गया और सोचने लगा, कि क्या मुझसे भी ज़्यादा बदक़िस्मत बच्चा कोई होगा इस दुनिया में।

जब पैसों ने पहली बार मेरी जेब में हल्ला मचाना शुरु किया था, तो सारा मामला बिल्कुल साफ नज़र आ रहा था। फ़ीस के पैसों से जलेबी खाओ, और छात्रवृत्ति के पैसों से फ़ीस भरो।

मुझे लगा था दो और दो हमेशा चार होते हैं और कभी पाँच नहीं हो सकते। मुझे कहाँ पता था कि कभी-कभी इनका जोड़ पाँच भी हो जाता है।

अगर मुझे पता होता कि मुझे छात्रवृत्ति अगले महीने मिलेगी, तो मैं जलेबी खाने का कार्यक्रम अगले महीने तक टाल देता।

अब जलेबी खाने के अपराध के लिए ज़िन्दगी में पहली बार मैं स्कूल में अनुपस्थित था और रेलवे स्टेशन के इस सुनसान कोने में पेड़ के नीचे बैठा था।

अनुपस्थितः ग़ैरहाज़िर, वहाँ नहीं होना
अनुदेशः सीख

फिर अचानक ये सोच कर कि मेरी आँखों से जो आसूँ टपक रहे हैं वो आँसू नहीं जलेबी का शीरा हैं, मैं हँस पड़ा।

जलेबियों से मेरा ध्यान फ़ीस पर गया, फ़ीस से मास्टर ग़ुलाम मोहम्मद की छड़ी पर, और उनकी छड़ी से ख़ुदा पर। मैंने अपनी आँखें बंद कर लीं और पूरी तन्मयता के साथ दुआ करने लगा।

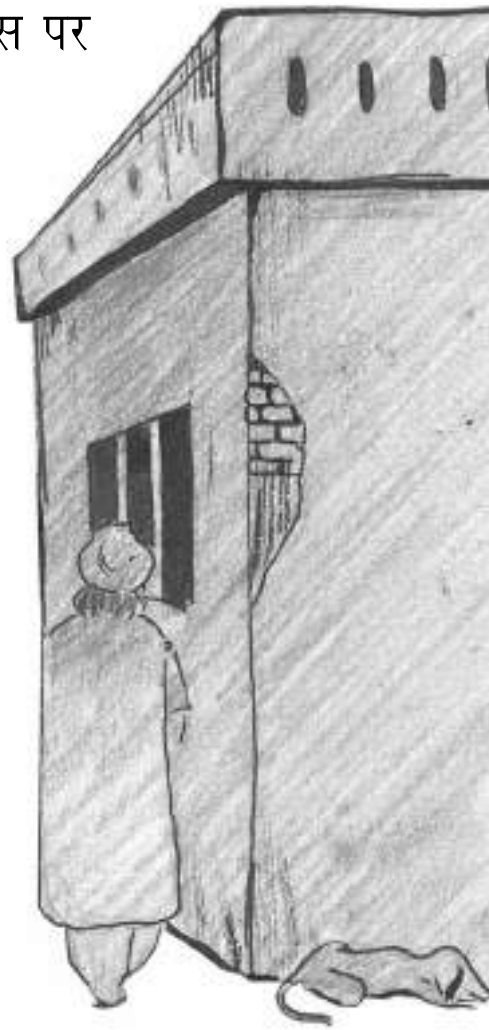

तन्मयताः मन लगाकर
चेतायाः सावधान किया

५

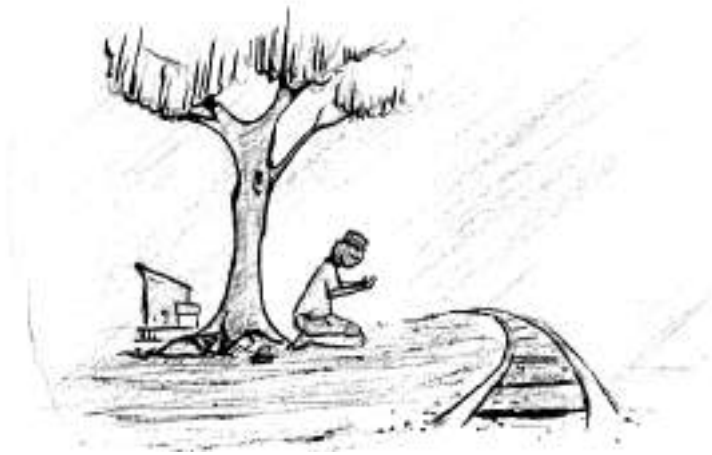

"अल्लाह मियाँ, मैं एक बहुत अच्छा लड़का हूँ। मैंने पूरी नमाज़ याद कर ली है। मुझे कुरान की आखिरी दस सूरतें भी अच्छी तरह याद हैं। अगर आप चाहें तो आपके लिए मैं अभी के अभी पूरी आयत-अल-कुर्सी पढ़ दूँ।

"आपके इस निष्ठावान गुलाम की ज़रूरत सिर्फ़ उन पैसों की है जिनकी मैंने जलेबी खा ली है। हाँ ठीक है, मैं अपनी ग़लती मानता हूँ। हालाँकि सारी की सारी मैंने नहीं खाईं।

निष्ठावानः ईमानदार और मेहनती

बहुत सारे बच्चों को भी खिलाई थीं। मगर हाँ, ये एक ग़लती थी।

"अगर मैं जानता कि छात्रवृत्ति के पैसे अगले महीने मिलेंगे, तो ना मैं जलेबियाँ खाता और ना ही दूसरों को खिलाता।

"अब आप सिर्फ़ एक काम कीजिए। मेरे बस्ते में चार रुपये डाल दीजिए। अगर उससे एक पैसा भी ज़्यादा होगा, तो मैं आपसे नाराज़ हो जाऊँगा।

"मैं वायदा करता हूँ, अगर फिर कभी फ़ीस के पैसों की मिठाई खाऊँ, तो जो काले चोर की सज़ा, वो मेरी। इसलिए अल्लाह मियाँ, सिर्फ़ एक बार मेरी मदद करो। आपके खज़ाने में तो किसी चीज़ की कमी नहीं है!

"अल्लाह मियाँ, मैं एक बड़े अफ़सर का भतीजा हूँ। क्या आप मुझे सिर्फ़ चार रुपये नहीं देंगे?"

इस प्रार्थना के बाद मैंने नमाज़ अदा की, आख़िरी चार सूरतें, आयत-अल-कुर्सी, कलमा-ए-तैयब पढ़ीं। सच कहूँ तो जो कुछ मुझे याद था वो सब पढ़ डाला। फिर बस्ते में फूंक मारी और कहा छू! फिर "बिस्मिल्लाह" कहने के बाद उसे खोला, तो मुझे एहसास

एहसासः जानना, समझना

हुआ कि लोग सच ही कहते हैं कि क़िस्मत का लिखा कोई नहीं मिटा सकता।

चार रुपये भूल जाओ, मेरे बस्ते में चार पैसे तक नहीं थे! बस कुछ किताबें-कॉपियाँ, एक पेन्सिल, एक शॉर्पनर, और एक ईद कार्ड, जो मेरे मामू ने पिछले ईद पर भेजा था।

मैं बहुत ज़ोर-ज़ोर से रोना चाहता था। पर तभी मुझे याद आया कि स्कूल ख़त्म हो चुका होगा और बच्चे घर जा रहे होंगे। थका-हारा मैं वहां से उठा और बाज़ार की तरफ़ चला गया। इंतज़ार करने लगा कि कब बच्चे बाहर आएँ और मैं भी उनके साथ घर चला जाऊँ।

मुझे पता ही नहीं चला कि मैं जलेबी वाले की दुकान के पास ही खड़ा हूँ। अचानक हलवाई ने आवाज़ लगाई, “क्यों भई, रुपये की जलेबियाँ तोल दूँ? आज जलेबी नहीं चाहिए?” मेरा दिल किया, कह दूँ आज तुम्हारी जलेबी तो नहीं, हाँ तुम्हारा कलेजा भून कर खाऊँगा! लेकिन उस दिन तबीयत कुछ ठीक नहीं थी। इसलिए मैं वहाँ से हट गया।

अगले दिन भी मैंने वही किया। तैयार होकर घर से निकला, स्कूल के दरवाज़े तक पहुँचा और रेलवे स्टेशन चल दिया।

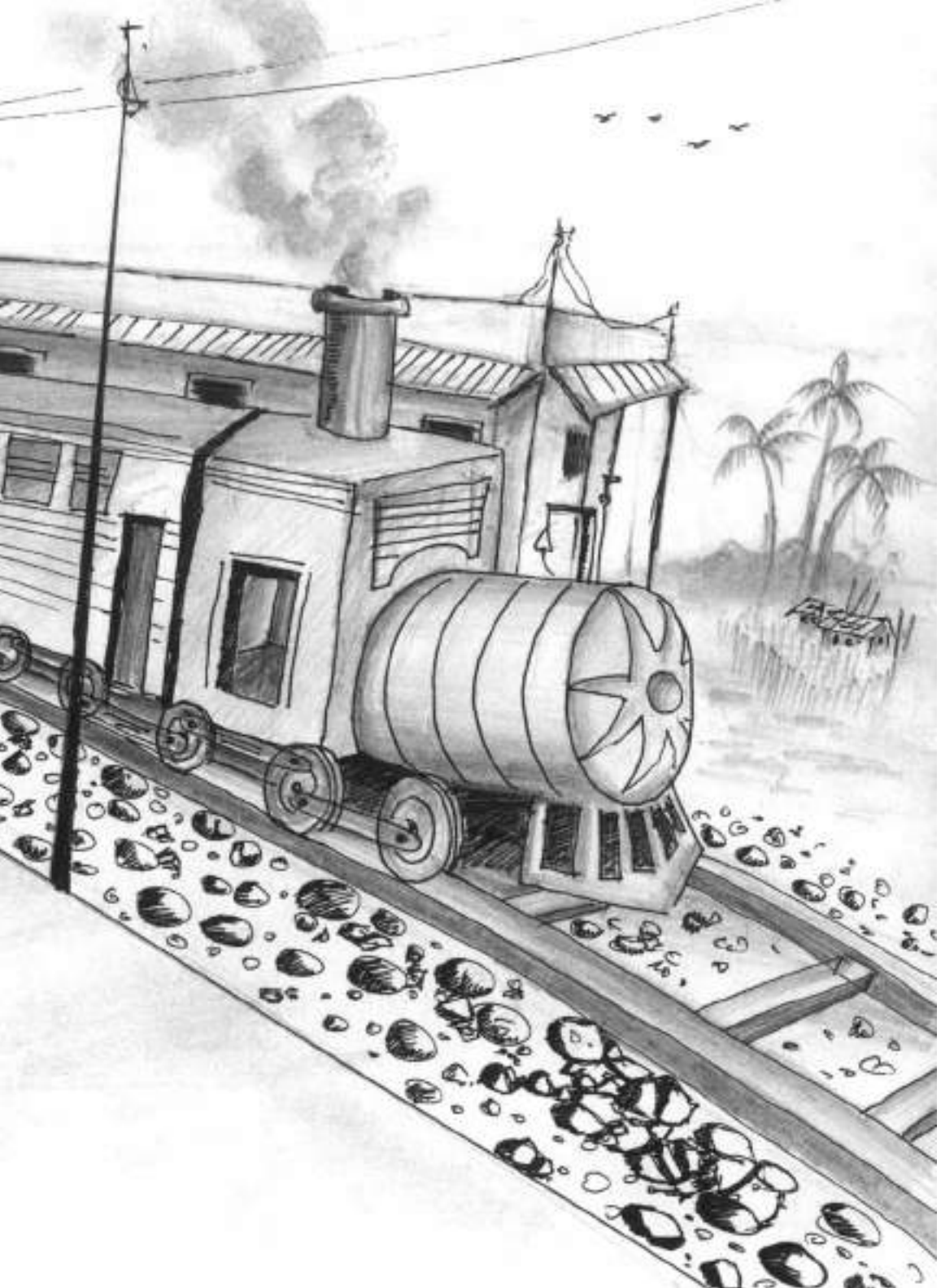

5

मैं उसी पेड़ के नीचे बैठा और वही दुआएँ दोहराईं। मैं लगातार गुज़ारिश करता रहा, “अल्लाह मियाँ, कम से कम आज तो दे दो, आज दूसरा दिन है।”

तब मैंने कहा, “ठीक है। आओ, हम एक खेल खेलते हैं। मैं यहाँ से उस सिगनल तक जाऊँगा। तुम चुपके से इस पत्थर के नीचे चार रुपये रख देना। मैं सिगनल छूकर वापस आ जाऊँगा। कितना मज़ा आएगा कि जब मैं पत्थर उठाऊँगा और उसके नीचे से चार रुपये निकलेंगे। तो तुम तैयार हो न? मैं सिगनल की तरफ़ जा रहा हूँ ... एक-दो-तीन!”

मैं सिगनल तक गया और मुस्काता हुआ लौटा। लेकिन उस पत्थर को उठाने की मेरी हिम्मत नहीं हुई। क्या होगा अगर वहाँ रुपये नहीं होंगे? लेकिन फिर सोचा, क्या हो अगर वहाँ हो?

आख़िरकार, बिस्मिल्लाह कहने के बाद जब मैंने पत्थर उठाया, तो उसके नीचे से लम्बे बालों वाला एक कीड़ा मुड़ते-सिकुड़ते मेरी तरफ़ रेंगने लगा। मैं चीखा और भागकर एक बार फिर सिगनल तक गया। तब घुटनों और हाथों के बल रेंगता मैं पेड़ तक पहुँचा। मैंने भरसक कोशिश की कि मेरी आँखें पत्थर की तरफ़ ना भटक जाएँ। फिर जब मैंने अपना बस्ता उठाया और जाने लगा, तो सोचा कि एक बार तो पत्थर के नीचे देखना चाहिए।

और आप जानते हैं मैंने क्या देखा? उस पर कीड़े महाराज आराम से बैठे मेरी तरफ़ घूर रहे थे।

मैं चलते हुए सोचने लगा, "कल मैं वज़ू करूँगा, साफ कपड़े पहन कर यहाँ आऊँगा। सुबह से दोपहर तक नमाज़ पढ़ूँगा। और अगर

वज़ूः नमाज़ पढ़ने से पहले हाथ-पैर धोना
गुज़ारिशः अनुरोध, प्रार्थना, निवेदन

तब भी अल्लाह ने मुझे पैसे नहीं दिए, तो मुझे यह सीखने पर मजबूर होना पड़ेगा कि मोलभाव कैसे किया जाता है। आख़िर अल्लाह मुझे पैसा नहीं देंगे तो और कौन देगा!

उस दिन जब मैं दिखाने के लिए "स्कूल" से, और वास्तव में रेलवे स्टेशन से घर पहुँचा, तो मैं पकड़ा गया। स्कूल से ग़ैरहाज़िरी

की ख़बर घर पहुँच चुकी थी। उसके बाद क्या हुआ ये बताना तो बेकार है।

जो हुआ, सो हुआ। लेकिन सातवीं-आठवीं कक्षा तक मैं यह सोचकर हैरान होता रहा कि अल्लाह मियाँ अगर मुझे चार रुपये दे ही देते, तो इससे किसी का क्या बिगड़ जाता?

बहुत दिन बाद मैं इस नतीजे पर पहुँचा, कि अगर अल्लाह मियाँ हर आदमी की हर मांग पूरी करते रहते, तो आज भी आदमी चील और कौवों की तरह पेड़ पर घोंसला बना कर जी रहे होते, और जलेबी बनाने की कला कभी नहीं सीख पाते!

खेल पहेली

पहले किसने खाया और किस किस को खिलाया?

एक रुपया		
दो रुपया		
तीन रुपया		
चार रुपया		

अपने मित्रों की पसंद का मूल्यांकन करो। नीचे दिए गए खानों में ✓ निशान लगाओ। जो भाता है उसको 5 नम्बर दो, जो नहीं भाता उसको 0 नम्बर दो। जो खाना पड़ेगा उसको 3 नम्बर दो।

चीज़ें	भाता	नहीं भाता	खाना पड़ेगा!
जलेबी			
करेला			
कुल्फ़ी			
पालक			
सेब			
बर्फी			
तोरई			
लौकी			
कुल अंक			

ज़रा सुनो किसकी आवाज़ है कैसी?

सिक्कों के आपस में टकराने पर
खनखनाहट की आवाज़ हुई

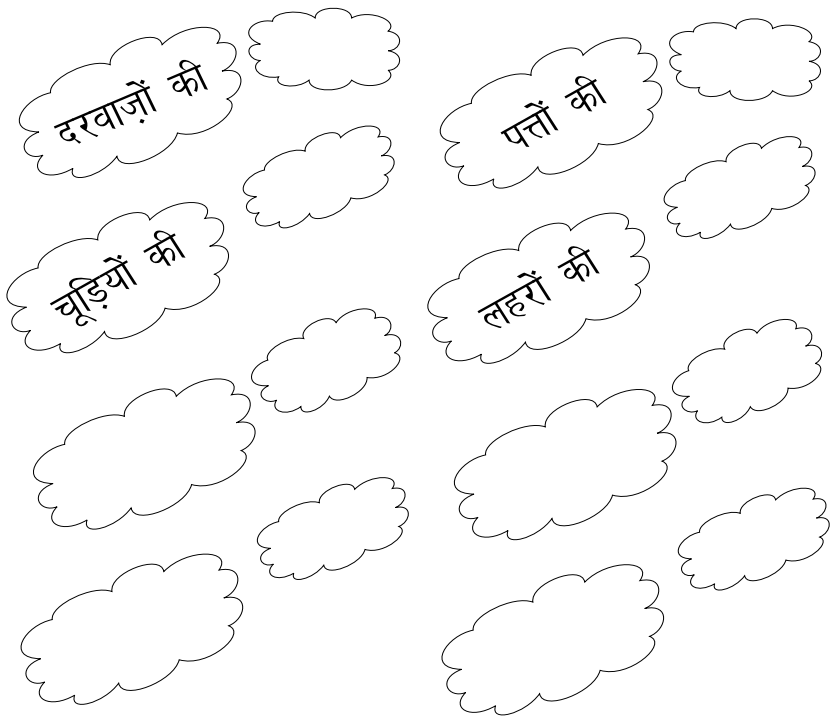

बच्चों अब आप खुद ढूँढ कर लिख सकते हैं।

कथा कहती है कहानी?

"जैसी करनी वैसी भरनी। लालच बुरी बला है।" ये सब मेरे लिए सिर्फ़ बातें ही थीं। लेकिन जलेबियों के चक्कर में मैंने बहुत कुछ सीखा!

कथा नियमित रूप से पेड़ लगाती है उस लकड़ी के बदले जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज़ बनता है।

इस किताब की बिक्री से मिली राशि का 10% अल्पाधिकारी बच्चों के एक स्कूल, कथाशाला को दिया जाएगा।

युवकथा की अन्य दिलचस्प किताबें!

युवकथा

"जैसी करनी वैसी भरनी। लालच बुरी बला है।" ये सब मेरे लिए सिर्फ़ बातें ही थीं। लेकिन जलेबियों के चक्कर में मैंने बहुत कुछ सीखा!